প্রচন্ত বুমুখাই পেন্ধা কৰিলৈ মোক

910)

रे कियां ज्याकामक अश्कीर्ना कियां क

24)

কবিৰ আপ্য কি ভাক সুধি অচন্ত বুঁগুহাই অল্প কৰিছিল।

27)

> किर्वक विमाल पृष्टि अशकाह्म फिल्ल।

7

होव्तक जालाकश्रम कबाब कथा वूकारेष । होव्तक जालाकश्रम कबाब कथा वूकारेष ।

(2)

⇒ अहल र्वेश्वराहे कविक एउंच खाला कि यूनि ख्या कविहिला।

या नुष्डें कविक कि कि पिल ?

हे विद्ये किविक देपाउ कर्ने जाक आर्ड्स पिल वूलि किविनिटिन देश्लिय जाहि।

के कि दें अंग देवाबन, कमाशाबि कि वैकाय-

) कविद्ध । अँहा उपावता क्याधाविष प्रार्थकीन (Seifless) पानव कथा चूकाव श्रक्रिइ 1

8। कविद्य किर्ब छाबा फिलानु कॅलाक्नेल द्यान क्वालीह ?

- कित्वि वज्रव भवा कर्न जाक आहम नाम् जाक द्रैशूराव भवा भक्ति लाए कवि निर्धिकलात् अभ्रेत अण्ड अवल कातिष्व एवा अक्षाज्व रहा भीत भारे पिशनु कैलाविल स्रत स्रालिष्ट् ।
- - किवियं कलिखां अंग अविव अंक कि पानवंब अभाइड आनवंबां शीड शाविल आकू देश्हा कविश् आमार्वापी य लामन निर्मालन मूक दिश्मा कुल-भाड आपिब प्रव पानवीष्ट्र ध्ववनजावाब पृब किंब-आम्रा, रेमकी, शक्ष्य, आदि खापि आनवीष्ट्र ध्यम्नावाब शीडव क्रिक्षिण ध्यम्व किंविल अभ्रम स्था

জাকাশ, বুমুহা আৰু বজুক কবিষ্ণি কি কৰে। প্ৰাণিপাত কৰিছে ?

ज्ञान किर्मिश्च आगवि जीवन खाक अआजव भवा पानवीम् आतालव् पृव किव जाव ठारेठ आनवि अविका किविक अश्कल्म अस्म किविह । किविव अरे असान काअक अक्रम किविनेन असामाला विकास पृष्टि वैश्वरारे काऊ खाक अस विजये उद्याउ किरा खाक आर्अव मुक्ति आमान किविह । अस्मिश्च किविहा अरे जिनिया आकृष्ठिक भविद्यदेनाव श्रावि कृष्ठ खावा किन श्रिमाला श्रिमिलाठ जुनारे हिन 9) ভাৰেছ ব্যাশ্বা কৰাঃ

कविन्नकारित आहित कविन आत्रम व्यापे भीत आविन हिता विनात विनात

किव आत्वा । आतूर्य कलानि वात प्रात्व राज्य गया आत्वक छेक्षाय किव पक आतिश्वन अआड़ शण्य यात्व किव्य अत्र खामा शूरि याशिष्ट् । किव्य खात हम किक खामा शक्ति खित्रम् एउँव स्थिर खामा श्वन तर्य । शिव्य यक्क बाव उपाउ किक पात किव्येत खार्थना छतारेष्ट्र या्व किव्यु वाव खावा अ आत्वाव शीठ शाव शाव ।

21) 1st part Same as Ans 20)

कवित्र व्याकाशव विशालन शाविल काद्यता कवि

कविच्च त्रामुक्क छाडि धामलाष्ट्र कावता एउँ स्माकव कमान अर्वित किविव विष्ठात्व। स्माइत ख्यक्षिव उलापामत्वावव लवा व्य किविष्ट्र आकि ख्याक ख्यवना आद्रवन किव त्राम्युखवापव छिविष्ट्र त्रकलात्व ख्युवन क्ष्म कवाव देष्ट्रा के ध्यकामा किविष्ट् । देशाव वात्व आकार्ष्ट्रा निष्ठ्रव विमामला छिति ब अम्ला अर्थेनिश्चक स्माविक सामविक छेपावन एप्युव्याव प्रव किविष्युव्य अम्रिकेव वस्त किवि छेपावन स्माविक काग्रमा किविष्ट्र।

st) 1st parch same as Ams as)

के कविद्य प्यकृतिव उलापात्वावव लहा कि दि बाहित्र एक लाए कविद्व छाटक छङ कविलाबाहित् आटादा प्यकान कविद्व ।

आत्व पविषो कविद्ध आतूर्व कलान अर्वत कबाब अक्षणाणी। किन्छ पात्वत्तेणी अआद्मुं आतूर्व वाद् किवा कविव्रोत कविव खां आश्चा आक्रिव प्रशास्त्र। स्पाय कविद्ध अराकालव शवा विशास साम्य खाढू उपाव एति, वूं भूराव शवा ध्यान्छ शक्ति, यद्भुव शवा उपाव कक्षे लाक आरअव युक्ति खार्वन किब आत्वलव क्रयूंगात शावरिस ध्यूंगां किबाह् ।

3) 1st faret Same as Ams 20)

कविनाका किव आ छा व आ व विक्रिनित

र्रम्याव पृत्व व्यक्त काकि, युक्त पृत्व निर्दिक वार देगाउ करें व्याकालाव पृत्व विकाल श्रमृत्व किर्वाष्ट्र पानवव अभाजि का निर्मात निर्मात किर्मात किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा किर्मात किर्मा किर्मा किर्म

लम्रा विम्रम्क

न कला पित्रा काक द्वावव अञ्चाञ्चक काक क्रिया विश्वा विश्वा विश्वा काक द्वावव अञ्चाञ्चक काक क्रिया विश्वा विश्वा विश्वा विश्वाव काक विश्वाव विश

तुर् : वक्क, वक्कन्न

महकीर्नाः क्रिक, अमुपाव

विमातः विवादे प्रकास,

पातवः ध्यञ्च , प्तूष्, वाक्षञ्ज धानिभाठः धानाम धानि, नमक्षाव

अिक : वार्स, विवा, विका

भाग न अद्भेग 'ग' दश्य ।

पान का निवासा वर्ष सम्म प्रकासा वर्ष सम्म ।

र्मः य-व लाह्छ अका पन्ना न अपाय अर्थने भ,

2753: Same as 1st Rule (see 2000)
3702 Alotors Same as 2nd world of

अधियातः स दुलअस्य कार्येव अधा त्ये प

पान किया कार्या करेंद्रित कि कार्या में दिए अश्रम : 'आ' पाति खि जान अववर्त वा व-व लाइन अका अनुम्ब पन्न 'अर्थना चा' द्रम् एवि: के वर्शव विकाता वर्गव समन मूक द्रमा पन्न 'अ' अर्थना म' द्रम्

81 अन्ति लाधाः म्बित्र = स्वित् + वार्ड अय्याषाक = अय् + व्याष्टाका-अन्त्रीर् = अयं + छीर् Extrea Questions: 11/w

৫০ হিমেণ ভাজৰিকাৰ, কাহত বুগাঁহাই অল্ল অৰ্থিশ গ্ৰিছ লীতিকবিতাটি স্থূনত: সানব্তাৰ্বমী। জনভাৰ কবিষ্ণু শোষিত, विका , अर्वाय द्वकाछनव वाति छीव्न कामाव दिल्ल विलाव विष्ठाबिष्ठ। कविब अष्ट ज्ञात्व अभाष्ठ भाग्व अिकी कबादी अरु काम नर्म । र्माव वाद कांद्र विविद्धि निक वाक आइअ। आत्रवाब वार्क्षण घी। अअछभाक कविष्म विश्वाअव ल'व भवा नारे। सिर्व विष अकृतिव उठवं अश्र विविष्ठ । र्वु अश्र विविष्ठ । र्वु अश्र विवि खाकामव ७६व एउँ विमिविष् आक्रि, देपाउ केले जाह उपावजा । नव्कान वकवारे ज्यक्ति ज्याकाल विष्वाब निविद्ध किय प्राप्त राजिकारे विविद्ध 'अर्वकार्य अडा' यह दिलादिन वास अस्कीनंजा नाशाकित। अर्क्विश कविव आविष्तक अँदावि अनोरेष्ट्र। स्अत्यद् एउं निर्दिकण्दा अँठा किन्छाव अदिख जीउ आरे बारूरव छातुव छ्या कवाव आभारका कि । एउँव गील चिष अश्रूष्टिजनक -किविड खानम पित लाह , द्राश्रा त्र'व कविव वात अखिपात। चुडिश्रा आकृषिक लिबिहोता न्त्री ब्रुटा, ब वजु बाक बाकाश्व श्रिक किया श्र िष्ठक्ष देश बाय यूलि दिन्ह